IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जौनपुर नगर की बढ़ती जनसंख्या : कारण प्रभाव एवं निवारण।

राज बहादुर
असि. प्रोफेसर
हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद (उ0प्र0)।

सारांश :

प्रस्तुत शोधपत्र जौनपुर नगर की जनसंख्या वृद्धि के कारणों, प्रभाव तथा नगरीय जनसंख्या वृद्धि को रोकने के उपायों का तार्किक विश्लेषण करता है। नगरीय जनसंख्या वृद्धि के कारणों के अन्तर्गत ग्रामीण बेराजगारी, ग्रामीण क्षेत्रों में अवसंरचनात्मक विकास की कमी, षिक्षा एवं स्वास्थ्य की पर्याप्त उपलब्धता में कमी, परिवहन एवं संचार सुविधाओं का कम विकास, निम्न जीवन स्तर एवं गरीबी तथा उद्योगों का विकास न होना आदि की पहचान की गयी है। नगरीय जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं एवं प्रभाव के अन्तर्गत स्थानाभाव एवं आवास की कमी, परिवहन, पेयजल एवं विद्युत की आपूर्ति में बाधा, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, षिक्षा एवं मनोरंजन अपशिष्ट पदार्थ, मलमूत्र विसर्जन एवं जल निकास, सामाजिक एवं प्रशासनिक आदि समस्याओं की व्याख्या की गयी है। नगरीय जनसंख्या वृद्धि के नियन्त्रण के उपायों के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र का अवसंरचनात्मक विकास, अर्थव्यवस्था का विकेन्द्रीकरण, नगरीय सुविधाओं का गाँवों में प्रसार, नगरीय क्षेत्रों में परिवार नियोजन कार्यक्रम एवं जनजागरूकता का प्रसार, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के वैकल्पिक साधनों के सृजन का प्रयास, प्रशासन द्वारा सरकारी योजनाओं के ठीक ढंग से क्रियान्वयन आदि उपायों की चर्चा की गयी है। इस अध्ययन के लिए द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों को आधार बनाया गया है। साथ ही उन आँकड़ों के आधार पर सम्बन्धित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर आरेख तैयार किया गया है। इसके अतिरिक्त अनुभव पर आधारित अध्ययन के अन्तर्गत प्रत्यक्ष अवलोकन को भी आधार बनाया गया है।

मुख्य शब्द : जनसंख्या वृद्धि, अवसरंचनात्मक विकास, जीवन स्तर, अपशिष्ट पदार्थ, विकेन्द्रीकरण, परिवार नियोजन।

प्रस्तावना/परिचय– एक क्षेत्र विशेष में किसी समय विशेष में रह रहे लोगों की संख्या में धनात्मक या ऋणात्मक परिवर्तन जनसंख्या वृद्धि कहलाता है। यह परिवर्तन कुल संख्या या प्रतिशत के रूप में दर्शाया जाता है। भूगोलवेत्ताओं के लिए जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि जनसंख्या वृद्धि किसी क्षेत्र की आर्थिक प्रगति, सामाजिक उत्थान तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं राजनैतिक आदर्श का एक महत्वपूर्ण सूचक है। जनसंख्या वृद्धि किसी क्षेत्र की जनसांख्यिकी गतिशीलता का केन्द्र है। जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं ने अधिकतर जनसंख्या परिवर्तन का अध्ययन दस वर्षो के समय के लिए किया है। यह समय सामान्यतः दो जनगणना के बीच का समय है। जनसंख्या परिवर्तन दर को निकालते समय जन्मदर, मृत्युदर एवं प्रवास को ध्यान में रखा जाता है। प्राकृतिक परिवर्तन दर में केवल जन्मदर एवं मृत्यदर को ध्यान में रखा जाता है जबकि वास्तविक परिवर्तन दर के अन्तर्गत जन्मदर एवं मृत्युदर के साथ–साथ प्रवास को भी ध्यान में रखा जाता है। इस प्रकार किसी भी जनसंख्या परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए तुलनात्मक आँकड़ों का ध्यानपूर्वक प्रयोग आवश्यक है। यदि जनगणना का उपगमन वास्तविक (de-facto) से बदलकर वैधानिक (de-jure) कर दिया गया हो तो जनगणना के आँकड़ें तुलनात्मक नहीं रहते हैं। नगरीय जनसंख्या वृद्धि के अध्ययन में जनसंख्या के प्राकृतिक परिवर्तन से सम्बन्धित आँकड़ों से अधिक जनसंख्या के वास्तविक परिवर्तन से सम्बन्धित आँकड़ों की उपयोगिता है क्योंकि नगरीय जनसंख्या में वृद्धि का मूल कारण ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर जनसंख्या के पलायन/प्रवास है।

अध्ययन क्षेत्र– जौनपुर एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। जौनपुर नगर पूर्वी उत्तर प्रदेष के मध्य में स्थित है। गोमती नदी के तट पर बसा यह नगर मध्य गंगा मैदान के गंगा–घाघरा दोआब में स्थित है। गोमती नदी इस नगर के मध्य भाग से होकर प्रवाहित होती है। इस नगर का अक्षांशीय विस्तार $25^0$45′ उत्तरी अक्षांश एवं देशान्तरीय विस्तार $82^0$41′ है। वर्ष 2016 में शासन द्वारा नगर के सीमा विस्तार से पहले इसका कुल क्षेत्रफल 1463.246 हे0 था, किन्तु 2016 में शासन द्वारा नगर के समीवर्ती क्षेत्रों के कुल 70 राजस्व गाँवों को शामिल करने पर इसके क्षेत्रफल में 488.047 हे0 की वृद्धि हुई। 2011 की जनगणना में इस नगर में कुल वार्डों की संख्या 31 थी जो वर्तमान में बढ़कर 41 हो चुकी है। 2011 में इस नगर की जनसंख्या जहाँ 180362 थी वहीं 2016 में क्षेत्र विस्तार से बढ़कर 241523 हो गयी। इस नगर की समुद्रतल से औसत ऊँचाई 82 मीटर है। इसके दक्षिण–पूर्व में 54 किमी0 की दूरी पर वाराणसी, उत्तर–पूर्व में 62 किमी0 की दूरी पर आजमगढ़, उत्तर–पश्चिम में 90 किमी0 की दूरी पर सुल्तानपुर और दक्षिण–पश्चिम में 102 किमी0 की दूरी पर प्रयागराज नगर स्थित हैं। समीपवर्ती क्षेत्रों की बात करें तो इस नगर के पश्चिमोत्तर में कलीचाबाद, कुल्हनामऊ, अहरामपुर, हंकारीपुर तथा खानापट्टी, उत्तर–पूर्व में रामपुर, पदुमपुर खास, फागूपुर, आदमपुर अकबर, तथा लखनपुर, दक्षिण–पूर्व में वीरपुर, विशेसरपुर, महँगूपुर, पचहटियाँ, जमैथा तथा नाथूपुर और दक्षिण–पश्चिम में जगदीशपुर, रामनगर भड़सरा, सैदनपुर तथा मुरादगंज राजस्व गाँव स्थित हैं।

जौनपुर नगर की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है। यहाँ का अधिकतम् तापमान मई माह में एवं न्यूनतम् तापमान जनवरी माह में रहता है। जून से सितम्बर माह के मध्य मानसूनी हवायें चलती हैं, जिसके कारण सर्वाधिक वर्षा भी इसी काल में होती है। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 100.89 सेमी0 होती है। यहाँ की मिट्टी दोमट एवं मटियार है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु द्वितीयक स्रोतों पर आधारित आँकड़ों तथा प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित अध्ययन को आधार बनाया गया है। नगरीय जनसंख्या से सम्बन्धित आँकड़ों के लिये जनगणना निदेशालय लखनऊ एवं स्थानीय निकाय निदेशालय, लखनऊ उ0प्र0 से प्राप्त आँकड़ों का उपयोग किया गया है। इसके साथ ही नगर पालिका परिषद जौनपुर तथा जिला सांख्यिकीय विकास पत्रिका से प्राप्त कुछ तथ्यों एवं आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन का उद्देष्य– प्रस्तुत शोध कार्य के निम्न उद्देष्य हैं–

1. जौनपुर नगर की जनसंख्या वृद्धि के कारणों की खोज करना।
2. जौनपुर नगर की जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय, आर्थिक एवं सामाजिक प्रभावों का आकलन करना।
3. जौनपुर नगर की जनसंख्या वृद्धि को रोकने के उपायों को सुझाना।
4. जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय, आर्थिक एवं सामाजिक प्रभावों को कम करने के उपायों का विश्लेषण करते हुए नगर के नियोजित विकास की रूपरेखा बनाना।

विष्लेषण एवं व्याख्या–

जौनपुर नगर में प्रतिदशक जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)

वर्ष	कुल जनसंख्या	पुरूष	स्त्री	दशक वृद्धि	दशक वृद्धि प्रतिशत
1901	42771	21271	21500	-	-
1911	30437	15888	14585	-12298	-28.75
1921	32569	17376	15193	+2096	+6.88
1931	37675	20353	17322	+5106	+15.68
1941	44833	24232	20601	+7158	+19.00
1951	52351	28022	24329	+7518	+16.77
1961	61851	33047	28804	+9500	+18.18
1971	80737	43412	37325	+18886	+30.53
1981	105140	56077	49063	+24403	+30.23
1991	130418	69312	61106	+25278	+24.04
2001	159696	84532	75164	+29278	+22.45
2011	180362	93718	86644	+20666	+12.94

स्रोत– जनगणना निदेशालय, लखनऊ एवं स्थानीय निकाय निदेशालय लखनऊ, उ.प्र.।

तालिका : जौनपुर नगर की जनसंख्या वृद्धि।

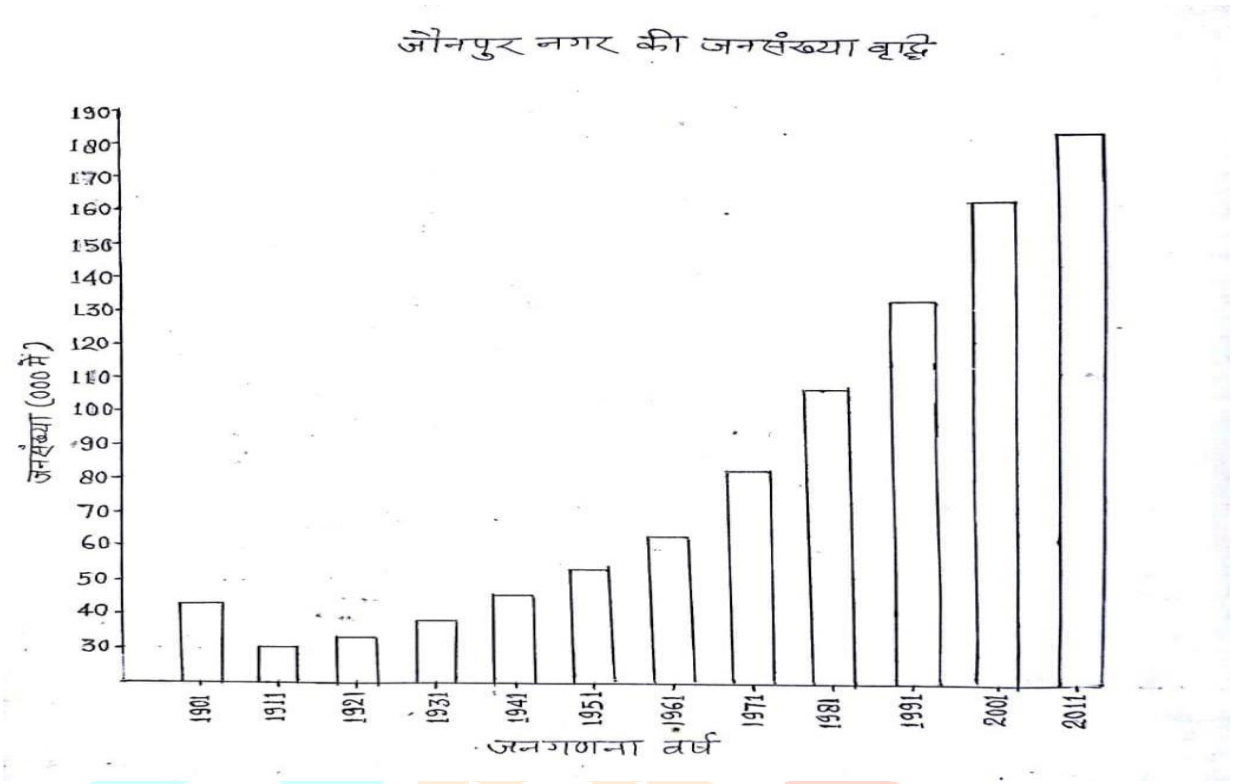

चित्र : जौनपुर नगर की जनसंख्या वृद्धि का दण्ड आरेख द्वारा प्रदर्षन।

भारत में नगरीय जनसंख्या के वृद्धि में नगरीय जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि का विशेष योगदान नहीं है क्योंकि यह ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में लगभग एक सी है। तीव्र नगरीकरण ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय केन्द्रों की ओर जनसंख्या प्रवास तथा ग्रामों का नगर के रूप में परिवर्तन का परिणाम है। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त निर्धनता, बेरोजगारी आदि के कारण असंख्य लोग गाँव छोड़कर रोजगार, शिक्षा आदि की प्राप्ति के उद्देश्य से निकटवर्ती नगरों में चले जाते हैं, जिससे नगरीय जनसंख्या में वृद्धि होती जाती है। आवश्यक कार्यवसर तथा सुविधाओं के उपलब्ध न होने पर नगरों में अनेक प्रकार की आर्थिक–सामाजिक समस्यायें उत्पन्न होती हैं। जौनपुर नगर भारतीय इतिहास के मध्यकाल में विकसित एक ऐतिहासिक नगर है। किसी नगर की जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन करने के लिए उसके ऐतिहासिक विकास की जानकारी आवश्यक है। अतः जौनपुर नगर की जनसंख्या वृद्धि के विश्लेषण एवं व्याख्या के अन्तर्गत सर्वप्रथम उसके ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डालना समीचीन होगा।

ऐतिहासिक विकास– एक नगर के रूप में जौनपुर का विकास वास्तव में मध्यकालीन भारतीय इतिहास के शर्की वंश में हुआ। जौनपुर नगर का प्राचीन नाम देवनगरी (शिवपुराण में) था, जिसे 1359 ई0 में प्रसिद्ध तुगलक शासक फिरोजशाह तुगलक ने अपने चचेरे भाई जौनां खाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) के नाम पर जौनपुर रख दिया। फिरोजशाह तुगलक ने इसकी स्थापना प्रशासकीय उद्देश्य से की थी। आगे चलकर यह शिक्षा के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इसकी तुलना ईरान के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र शिराज से होने लगी और इसे शिराज–ए–हिन्द के नाम से पुकारा जाने लगा। फिरोजशाह के समय इसे मुसलमानों की राजधानी बनाया गया। फिरोजशाह ने

जौनपुर नगर में एक किला बनवाने का आदेश दिया था। इसके साथ ही शाही किले के अतिरिक्त प्रसिद्ध अटाला मस्जिद के निर्माण का श्रेय भी फिरोजशाह तुगलक को जाता है। अटाला मस्जिद के कार्य को पूर्ण कराने का श्रेय प्रसिद्ध शर्की शासक इब्राहिम शर्की को दिया जाता है। 1484 ई0 से 1525 ई0 तक जौनपुर पर लोदी वंश का शासन रहा। इसके बाद सल्तनत कालीन शासकों के बाद मुगल काल के शासकों का इस पर आधिपत्य रहा। ऐसा माना जाता है कि महान मुगल सम्राट अकबर यहाँ आया था। अकबर ने अपने आज्ञाकारी सेवक मुनीम खाँ को जौनपुर क्षेत्र का कार्यभार सौपा था। मुनीम खाँ ने ही जौनपुर नगर के दोनों तरफ के क्षेत्रों को जोड़ने वाले शाही पुल का निर्माण करवाया था। जौनपुर का एक अन्य महत्वपूर्ण शर्की शासक इब्राहिम शाह था। वह शिक्षा एवं कला प्रेमी था। इसके समय में ही जौनपुर फारसी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बना तथा शिराजे हिन्द की पदवी से विभूषित हुआ। लगभग डेढ़ शताब्दी तक मुगल सल्तनत का अंग रहने के बाद 1972 ई0 में जौनपुर अवध के नवाबों के आधिपत्य में आ गया।

ब्रिटिष शासन में शिक्षा, सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव से यातायात, संचार, कृषि, सिंचाई, आधुनिक शिक्षा, शासन व्यवस्था, सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थानों की स्थापना, आधुनिक अर्थव्यवस्था आदि का विकास हुआ। ब्रिटिश शासन उल्लेखनीय देन नगर पालिका परिषद का गठन है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में सरकार ने जौनपुर नगर के विकास की प्रक्रिया को तीव्र किया। नगर क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किये गये। यातायात के साधनों, सड़क मार्गों एवं रेल मार्गों का तीव्र गति से विकास किया गया। शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, विद्युत जैसी आधारभूत आवश्यकताओं के विकास से प्रगति हुई। आधारभूत सुविधाओं में वृद्धि से ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या का भारी मात्रा में पलायन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि से अनेक नगरीय समस्याओं का भी जन्म हुआ।

नगर की जनसंख्या वृद्धि के कारण– भारत में नगरीकरण पाश्चात्य देषों की भाँति औद्योगीकरण का सहगामी नहीं है। यहाँ औद्योगीकरण के अभाव में भी नगरीकरण तेजी से हो रहा है। जौनपुर नगर में जनसंख्या संकेन्द्रण का मुख्य कारण न केवल नगरीय सुविधाओं तथा कार्यावसरों की उपलब्धता एवं श्रम की मांग (आकर्षण) का परिणाम है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त निर्धनता तथा बेरोजगारी के कारण ग्रामीण दबाव का प्रतिफल भी है। सामान्यतः जौनपुर नगर की जनसंख्या वृद्धि के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं–

i. **ग्रामीण बेरोजगारी–** जौनपुर नगर की जनसंख्या वृद्धि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण ग्रामीण निर्धनता एवं बेरोजगारी है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का मुख्य साधन कृषि कार्य है। जनसंख्या की तुलना में कृषि भूमि की कम उपलब्धता होने से प्रच्छन्न बेरोजगारी की समस्या ग्रामीण क्षेत्र

में व्यापक है। यही कारण है कि भारी संख्या में ग्रामीण रोजगार की तलाष में नगरीय क्षेत्र की ओर प्रवास करते हैं, जिससे नगरीय जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है।

ii. **अवसंरचनात्मक विकास–** ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बहुत सी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। सड़क, पेयजल, स्वास्थ्य एवं षिक्षा से सम्बन्धित सुविधायें, आवास आदि आधारभूत सुविधाओं का जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में अभाव है, वहीं नगरीय क्षेत्रों में अवसंरचना के विकास से ग्रामीण क्षेत्रों के लोग नगरीय सुविधाओं के आकर्षण से नगर की ओर पलायन करते हैं, जिससे नगरीय जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है।

iii. **शिक्षा एवं स्वास्थ्य–** अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं एवं उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिये ग्रामीण क्षेत्रों से लोग नगर की ओर आकर्षित होते हैं। जौनपुर नगर में तिलकधारी महाविद्यालय, राजा श्री कृष्णदत्त पी0जी0 कॉलेज, मोहम्मद हसन पी0जी0 कॉलेज के साथ राजकीय आई0टी0आई0, प्रसाद प्रौद्यौगिकी संस्थान जैसी तकनीकी संस्थायें भी हैं, जिनमें प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में नवयुवक अध्ययन के लिये ग्रामीण क्षेत्रों से प्रवास करते हैं। जौनपुर नगर में अच्छे स्वास्थ्य के लिये अमर शहीद उमानाथ सिंह जिला चिकित्सालय के अतिरिक्त अनेक प्राइवेट अस्पताल भी हैं, जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों से लोग इलाज के लिये नगर की ओर आते हैं।

अमर शहीद उमानाथ सिंह जिला चिकित्सालय, जौनपुर

iv. **परिवहन एवं संचार–** ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी परिवहन एवं संचार के पर्याप्त साधन नहीं है। जहाँ एक ओर ग्रामीण क्षेत्रों में पक्की सड़कों का अभाव है, वहीं दूसरी ओर इण्टरनेट कनेक्टिविटी की दशा भी दयनीय है। नगरीय क्षेत्रों में उपर्युक्त सुविधाओं के आकर्षण से ग्रामीण क्षेत्रों से लोग नगरीय क्षेत्रों की ओर आते हैं और जनसंख्या में वृद्धि करते हैं।

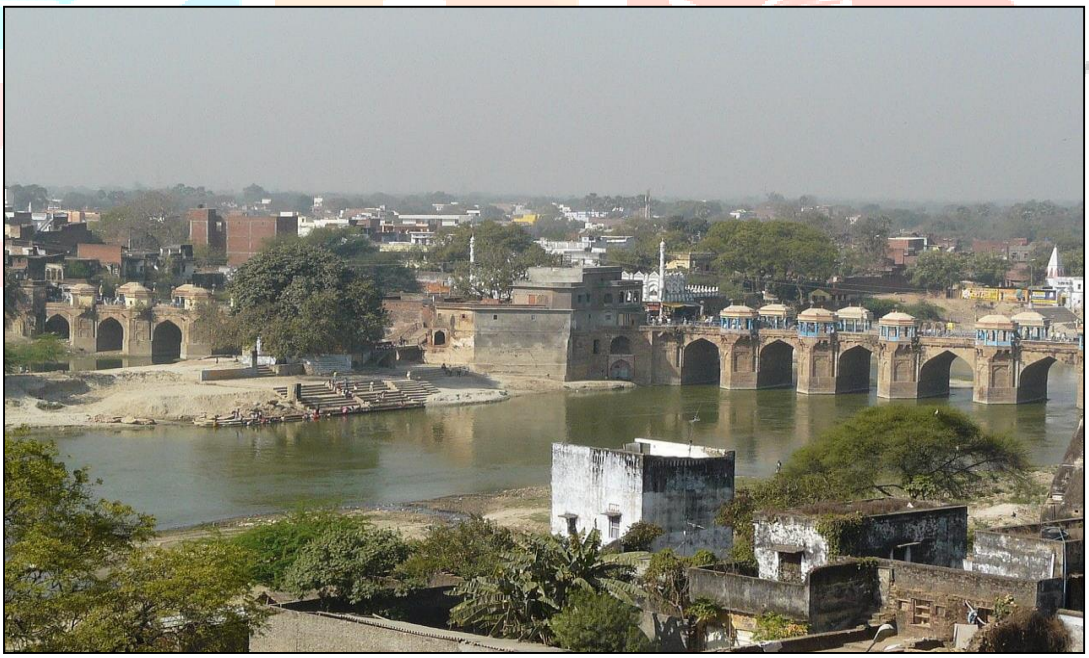

नगर के दोनों छोर को जोड़ने वाला ऐतिहासिक शाही पुल

v. **उद्योग–** औद्योगीकरण एवं नगरीकरण एक दूसरे के सहचर माने जाते है। औद्योगिक विकास के साथ परिवहन के साधनों, व्यापार, वाणिज्य आदि विविध प्रकार के गैर कृषि कार्यो का विकास होता है। भारत के छोटे नगरों में जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण उद्योग न होकर सेवा क्षेत्र है, किन्तु छोटे एवं कुटीर उद्योग के कारण छोटे नगर भी जनसंख्या को आकर्षित करते हैं। जौनपुर नगर में भारी उद्योगों का अभाव है। यहाँ के प्रमुख उद्योगों में कालीन/ऊनी दरी निर्माण, करंजाकला के पास कपास मिल, इत्र निर्माण आदि प्रमुख हैं। नगर क्षेत्र के बाहर

जौनपुर–वाराणसी मार्ग के सहारे जलालपुर के पास तथा जौनपुर–प्रयागराज मार्ग के सहारे सतहरिया के पास भारी उद्योगों की स्थापना की गयी है। उपर्युक्त उद्योगों में श्रमिकों का ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन देखने को मिलता है।

vi. **ऐतिहासिक एवं सामाजिक कारण–** सामाजिक सुविधाओं के विकास तथा धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थानों के महत्व का भी नगरीकरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव देखने को मिलता है। सामाजिक सुविधायें जैसे मनोरंजन, स्वास्थ्य, षिक्षा आदि के विकास ने जहाँ जौनपुर नगर की जनसंख्या में वृद्धि की वहीं ऐतिहासिक महत्व के कारण भी जौनपुर नगर में जनसंख्या का बसाव धीरे–धीरे बढ़ता गया। यहाँ शाही किला, शाही पुल, अटाला मस्जिद, लाल दरवाजा मस्जिद आदि ऐतिहासिक स्मारक हैं, जो एक विशेष धार्मिक समूह के लोगों के लिए नगर का महत्व बढ़ा देते हैं।

vii. **जीवन स्तर एवं निर्धनता–** भारत में नगरीय जनसंख्या वृद्धि का कारण ग्रामीण क्षेत्रों में निम्न जीवन स्तर एवं निर्धनता के कारण लोगों का नगर की ओर पलायन रहा है। जौनपुर नगर के समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों से लोग उपर्युक्त कारण से नगर की ओर प्रवास करते हैं।

नगरीय जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्यायें एवं उनके प्रभाव :

i. **स्थानाभाव एवं आवास की समस्या–** विभिन्न नगरीय सुविधाओं जैसे– रोजगार, षिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन, परिवहन एवं संचार आदि से आकर्षित होकर ग्रामीणजन बड़ी संख्या में निकटवर्ती नगर की ओर पलायन करते हैं, जिससे नगर की जनसंख्या निरन्तर बढ़ती जाती है। बढ़ी हुई जनसंख्या के रहने के लिए अतिरिक्त भूमि एवं आवास की आवश्यकता पड़ती है। इसके कारण नगरीय क्षेत्रों में दो प्रकार की समस्यायें उत्पन्न होती हैं– कृषि भूमि पर अतिक्रमण तथा भूमि के मूल्य में तीव्र वृद्धि। उपर्युक्त दोनों समस्याओं को दृश्टिगत रखते हुए शासन को वर्ष 2016 में जौनपुर नगरीय क्षेत्र में वृद्धि करनी पड़ी। समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित 70 राजस्व गाँवों को नगरीय क्षेत्र में शामिल कर लिया गया, जिससे नगरीय क्षेत्र के 31 वार्ड की संख्या बढ़कर 41 हो गयी। इसके अतिरिक्त जिस दर से नगर की जनसंख्या बढ़ती है उस दर से आवासों की संख्या में वृद्धि नहीं हो पाती है। सीमित गृहों के कारण मकानों के किराये इतने अधिक हो जाते है कि निम्न आय वर्ग के लोगों की पहुँच से बाहर हो जाते हैं। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोग गन्दी बस्तियों तथा झुग्गी–झोपड़ियों अथवा फुटपाथों पर सोने के लिए मजबूर हो जाते हैं। जौनपुर नगरीय क्षेत्र में सद्भावना सेतु जौनपुर जंक्शन एवं जौनपुर सीटी स्टेषनों तथा अन्य प्रमुख सार्वजनिक स्थलों के पास ऐसी बस्तियाँ दिखाई देती हैं।

सद्भावना सेतु के समीप स्थित झुग्गी–झोपड़ी

ii. **परिवहन की समस्या–** नगरीय विस्तार एवं बढ़ते नगरीकरण ने यातायात सम्बन्धी अनेक जटिल समस्यायें उत्पन्न कर दी हैं। सड़कों की खराब स्थिति, दैनिक आवागमन हेतु साधनों का अभाव, सड़कों के सकरा होने तथा वाहनों की पार्किंग सुविधा न होने से अत्यधिक भीड़, यात्रा किराया और माल भाड़ा का अधिक होना आदि जौनपुर नगर के परिवहन से सम्बन्धित आम समस्यायें हैं। यद्यपि जौनपुर नगर में सरकारी बस स्टाप तथा दो रेलवे स्टेशन हैं, किन्तु अधिक जनसंख्या और सभी मार्गों पर पर्याप्त परिवहन सुविधायें न होने से जन सामान्य को अधिक समस्यायें झेलनी पड़ती हैं।

iii. **जलापूर्ति एवं विद्युत आपूर्ति की समस्या–** नगर क्षेत्र में अधिक जनसंख्या होने से शुद्ध पेयजल की आपूर्ति प्रशासन के लिये कठिन होती है। शुद्ध पेयजल के साथ–साथ उद्योग एवं घरेलू उपयोग के लिये पर्याप्त मात्रा में जल एवं ऊर्जा की आवश्यकता होती है। बिना विद्युत के नगरीय जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। भूमिगत जल को नलकूपों द्वारा भूतल पर लाने तथा उसे घरों एवं कारखानों तक पहुँचाने के लिये मशीनों तथा उपकरणों को भी विद्युत की आवश्यकता पड़ती है। विद्युत एवं जल की पर्याप्त सुविधा न होने से नगर के सभी कार्य अस्त–व्यस्त हो जाते हैं। जनसंख्या वृद्धि से दोनों की मांग में वृद्धि होती है, जिससे मांग एवं आपूर्ति में संतुलन बनाना कठिन होता है। जौनपुर नगर में प्रायः गर्मियों में मांग की तुलना में आपूर्ति कम होने से अनेक समस्यायें पैदा हो जाती है।

iv. **स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समस्या–** नगर की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, मलिन बस्तियों के विकास, जल एवं वायु प्रदूषण, शुद्ध पेयजल की आपूर्ति में गड़बड़ी होने से निर्धनता एवं बेरोजगारी आदि के परिणास्वरूप नगरों में तरह–तरह की बीमारियों के फैलने से जनस्वास्थ्य में गिरावट आती है। इसके लिये उपयुक्त चिकित्सा व्यवस्था का होना अनिवार्य होता है। जौनपुर नगर में चिकित्सा

के लिये अमर शहीद उमानाथ सिंह जिला चिकित्सालय की स्थापना की गयी है। इसके अतिरिक्त अनेक प्राइवेट अस्पताल भी है, किन्तु इतनी अधिक जनसंख्या के लिये यह पर्याप्त नहीं है। प्रशासनिक उदासीनता ने इस समस्या को और भी बढ़ा दिया है। सरकारी अस्पतालों में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा प्राइवेट अस्पतालों में लगने वाले मनमाने खर्च ने इस समस्या को और अधिक गम्भीर बना दिया है।

v. **शिक्षा एवं मनोरंजन की समस्या–** नगरों में जहाँ एक ओर नगर की जनसंख्या को शिक्षित करने की जिम्मेदारी होती है, वहीं दूसरे जिलों एवं ग्रामीण क्षेत्रों से भी उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने के लिये भी भारी संख्या में छात्र/छात्राएं आते हैं। जौनपुर में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, तिलकधारी महाविद्यालय, राजा श्रीकृष्ण दत्त पी0जी0 कालेज, मोहम्मद हसन पी0जी0 कालेज, राजकीय आई0टी0आई0, प्रसाद प्रौद्यागिकी संस्थान जैसे उच्च एवं तकनीकी षिक्षा के केन्द्र स्थापित किये गये हैं। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में उपर्युक्त शैक्षिक संस्थान पर्याप्त नहीं हैं, जिसके कारण नगर के बच्चों को समुचित शिक्षा और प्रशिक्षण नहीं मिल पा रहा है। इसी प्रकार नगरवासियों के मनोरंजन के लिये सिनेमाघर, थियेटर, क्लब, खेल के मैदान, पार्क, पुस्तकालय आदि की व्यवस्था होनी चाहिए। जौनपुर नगर में कृषि भवन में स्थित पार्क एवं वन बिहार पार्क की स्थापना की गयी है। इसके अतिरिक्त जेसीज चौराहे के पास एवं प्रसाद प्रौद्योगिकी संस्थान के बगल में पार्क बनाने का प्रस्ताव हुआ है। नगर क्षेत्र में इसके अतिरिक्त पाँच सिनेमाघर भी है, किन्तु बढ़ती हुयी जनसंख्या की मनोरंजन आवश्यकताओं के लिये ये पर्याप्त नहीं हैं।

vi. **अपशिष्ट पदार्थों एवं मलमूत्र विसर्जन तथा जल निकास की समस्या–** नगरीय जनसंख्या में वृद्धि होने से लोगों द्वारा प्रयुक्त उपभोग सामग्रियों से अत्यधिक मात्रा में अपशिष्ट पदार्थो का उत्पादन होता है, जिनका प्रषासनिक उपेक्षा के कारण समुचित निस्तारण नहीं हो पाता है। प्लास्टिक के थैलों तथा बोतलों ने इस समस्या को और बढ़ा दिया है। प्लास्टिक के थैले नालियों, नाले, सीवर पाइपों आदि में फँस जाते है, जिससे जल निकास अवरूद्ध हो जाता है। इसी प्रकार नगर से निकलने वाले गन्दे जल में अनेक प्रकार के विषैले पदार्थ मिले रहते हैं जो मनुष्य, जीवों एवं वनस्पतियों के लिये हानिकारक होते हैं। सिपाह क्षेत्र के सब्जी पैदा करने वाले किसानों द्वारा सीवर के पानी से सिंचाई कार्य किया जाता है। इस प्रकार पैदा की हुयी सब्जियाँ मानव स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक होती हैं। जौनपुर नगर में पर्याप्त सुविधायें न होने से कुछ लोग ग्रामीण क्षेत्रों की भाँति अभी भी खुले में शौच करते हैं। खुले शौचालयों तथा मलमूत्र की खुली नालियों से एक ओर जहाँ दुर्घन्ध निकलती रहती है, वहीं दूसरी ओर जल के साथ घुलकर ये मलमूत्र विभिन्न नालों के माध्यम से गोमती नदी में प्रवाहित होते रहते है, जिससे जल प्रदूषण की गम्भीर समस्या उत्पन्न होती है। जौनपुर नगर से प्रतिदिन 80 टन कचरा निकलता है।

कचरा निस्तारण की नगर पालिका परिषद के पास समुचित व्यवस्था नहीं है। नगर से बाहर कुल्हनामऊ में 12 करोड़ की लागत से सालिड वेस्ट मैनेजमेण्ट प्लान्ट की बुनियाद वर्ष 2008 में रखी गयी, किन्तु यह प्लान्ट अभी भी अधूरा पड़ा है। नगर में जेसीज चौराहे एवं कचहरी पुल के मध्य तथा सिपाह स्थित रेलवे क्रासिंग तथा सेण्ट पैट्रिक्स स्कूल के मध्य सड़क के दोनों किनारों पर कूड़े–करकट के ढेर से पर्यावरणीय प्रदूषण की अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। इसके अतिरिक्त कुल्हनामऊ प्लान्ट के खाली मैदान में लम्बे समय से डम्प किये जा रहे कूड़े के चलते यहाँ कूड़ों का पहाड़ सा बनता जा रहा है।

vii. प्रशासनिक तथा सामाजिक समस्यायें– अधिक क्षेत्रीय विस्तार तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण नगर की प्रशासनिक व्यवस्था का संचालन कठिन हो जाता है। जौनपुर नगर का प्रशासन नगर पालिका के हाथ में होता है, किन्तु नगर पालिका के आर्थिक स्रोत सीमित हैं। इसके अतिरिक्त कभी–कभी राजनीतिक मतभेदों के कारण भी नगरीय प्रशासन का संचालन कठिन हो जाता है। नगर में अनेक प्रकार के सामाजिक अपराध जैसे– हत्या, अपहरण, डकैती, बलात्कार, मद्यपान, जमाखोरी, कालाबाजारी, मादक द्रव्यों की तस्करी, जुआ, वेश्यावृत्ति आदि अधिक होते जा रहे हैं, जो एक तरफ प्रषासन के लिये चुनौती का कार्य करते है, तो दूसरी ओर नगरीय जीवन को अधिक कष्टकारी बना देते हैं।

नगरीय जनसंख्या वृद्धि को रोकने के उपाय–

i. बहुमुखी ग्रामीण विकास– नगरों में आवास एवं भूमि की कमी तथा मलिन बस्तियों के विकास के लिये सर्वाधिक उत्तरदायी कारक ग्रामों से नगरों की ओर जनसंख्या स्थानान्तरण है। असंख्य ग्रामीण युवक रोजगार तथा अन्य सुविधाओं की तलाश में गाँवों से नगरों की ओर पलायन करते हैं। इस पलायन को रोकने के लिये ग्रामों का समुचित विकास आवष्यक है। यदि नगरीय सुविधायें तथा रोजगार गाँवों में ही उपलब्ध करा दें तो इस समस्या का समाधान सम्भव है। गाँवों की कृषि प्रणाली में सुधार, कृषि आधारित उद्योगों का विकास, आधुनिक सुविधायें जैसे– शुद्ध पेयजल, विद्युत, यातायात, मनोरंजन, षिक्षा, चिकित्सा आदि का समुचित प्रबन्ध वर्तमान ग्रामीण क्षेत्र की महती आवष्यकता है।

ii. अर्थव्यवस्था का विकेन्द्रीकरण– केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था जनसंख्या समूहन को बढ़ावा देती है। नगरों में जनदबाव में कमी लाने के लिये अर्थव्यवस्था का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों में भी आवश्यक है। आर्थिक संसाधनों के विकेन्द्रीकरण से नगरीय जनसंख्या समूहन में कमी आयेगी, जिससे आवास से सम्बन्धित समस्यायें तथा मलिन बस्तियों की समस्या स्वतः कम होकर अन्ततः समाप्त हो जायेगी।

iii. **नगरीय सुविधाओं का ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसार–** जहाँ एक ओर ग्रामीण जनसंख्या रोजगार के लिये नगरीय क्षेत्रों में प्रवास करती है, वहीं दूसरी ओर नगर में कुछ ऐसी मूलभूत सुविधायें मिलती हैं, जिनका ग्रामीण क्षेत्रों में अभाव देखने को मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन, आवास, परिवहन, स्वच्छ पेयजल, विद्युत आपूर्ति, संचार आदि नगरीय सुविधाओं के प्रसार से जनसंख्या के नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवास को रोका जा सकता है। जब नगरीय सुविधायें ग्रामीण क्षेत्रों में ही मिलने लगेंगी तो ग्रामीण जनसंख्या का पलायन नगर की ओर धीरे–धीरे कम होने लगेगा। इससे नगरीय जनसंख्या की वृद्धि पर अंकुश लगेगा।

iv. **नगरीय क्षेत्रों में परिवार नियोजन एवं जन–जागरूकता का प्रसार–** यद्यपि नगरीय जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण ग्रामीण क्षेत्रों से नगर की ओर लोगों का प्रवास है। किन्तु नगरीय क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों से पलायित होकर आने वाले अधिकांश लोग अशिक्षित एवं परिवार नियोजन कार्यक्रमों के बारे में अनभिज्ञ होते हैं। ये लोग नगर की प्राकृतिक जनसंख्या में वृद्धि करते रहते हैं। ऐसे लोगों को परिवार नियोजन कार्यक्रमों के बारे में तथा सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से जागरूक करके प्राकृतिक जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगा सकते हैं। इसके अतिरिक्त नगरवासियों में भी जो सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से जागरूक नहीं है, उन्हें भी जागरूक करके जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किया जा सकता है।

v. **रोजगार के वैकल्पिक साधनों का सृजन–** ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सीमित होते है। ग्रामीण क्षेत्र कृषि प्रधान होता है। यहाँ उद्योगों का अभाव देखा जाता है। ऐसा नहीं है कि ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योग नहीं लगाये जा सकते। नगरीय क्षेत्रों में सुविधाओं के कारण पूंजीपति एवं सरकार उद्योग लगाते है। यदि विद्युत, परिवहन एवं संचार सुविधाओं का ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त विकास हो जाये तो, ऐसे क्षेत्रों में भी पूंजी का आकर्षण सम्भव है। कृषि पर आधारित उद्योगों के विकास से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की समस्या का समाधान सम्भव है। रोजगार की समस्या का समाधान होने से भारी संख्या में ग्रामीण जनसंख्या का पलायन नगरों की ओर रूक जायेगा और नगरीय जनसंख्या वृद्धि की समस्या से छुटकारा मिलेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार द्वारा संचालित मनरेगा कार्यक्रम इस दिषा में एक सराहनीय कदम है।

vi. **सरकारी योजनाओं को सही तरीके से लागू करना–** प्रायः यह देखा जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाओं के अभाव के कारण लोग नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन करते हैं। ऐसा नही है कि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिये प्रयास नहीं करती, किन्तु भ्रष्ट नौकरशाही ने सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं को सही तरीके से संचालित नहीं किया है। वर्ष 2004 में ग्रामीण स्तर पर शहरी सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये भारत सरकार ने PURA प्रोजेक्ट की शुरूआत की। इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण विकास एवं रोजगार से सम्बन्धित सामुदायिक विकास कार्यक्रम (CDP-1952), समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम (IRDP-1976/1977), राष्ट्रीय ग्रामीण

रोजगार कार्यक्रम (NRPP-1980), जवाहर रोजगार योजना (JRY-1993), इन्दिरा आवास योजना (1993-94), प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY-2000), स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY-1999), नरेगा/मनरेगा (2005) आदि तथा पेयजल से सम्बन्धित प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना (1999) एवं ग्रामीण पेय जलापूर्ति योजना आदि की शुरूआत की गयी, किन्तु उपर्युक्त योजनाओं के ठीक ढंग से क्रियान्वयन न होने के कारण आंशिक सफलता ही मिल पायी है। यदि उपर्युक्त योजनाओं का भ्रष्टाचाररहित एवं ठीक ढंग से क्रियान्वयन किया जाये तो अपेक्षित परिणाम मिल सकता है। उससे ग्रामीण जनसंख्या का नगरों की ओर पलायन रूकने से नगरीय जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाया जा सकता है।

निष्कर्ष– इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि जहाँ एक ओर अनेक प्रकार की सामाजिक एवं प्रशासनिक समस्यायें पैदा करती हैं, वहीं दूसरी ओर अनेक पर्यावरणीय समस्याओं को भी जन्म देती है। जौनपुर नगर के नियोजित विकास के लिये ग्रामीण जनसंख्या का नगर की ओर पलायन रोकना अत्यन्त आवष्यक है। इसके साथ ही नगर में निवास करने वाले लोगों के लिये शुद्ध पेयजल, आवास, विद्युत ऊर्जा, चिकित्सा, शिक्षा, सफाई, परिवहन तथा मनोरंजन जैसी मूलभूत नगरीय सुविधाओं की समुचित व्यवस्था करना नगर प्रशासन के लिये आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची

1. शम्भूनाथ (2002), जौनपुर नगर का कार्यात्मक स्वरूप : एक भौगोलिक अध्ययन।
2. हुसैन, माजिद (2012), मानव भूगोल, रावत पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।
3. बंसल, सुरेश चन्द्र (2014–15), नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।
4. तिवारी, रामचन्द्र (2015), भारत का भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स इलाहाबाद।
5. चान्दना, आर0सी0 (2015), जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना।
6. सिंह, ओ0पी0 (2016), नगरीय भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
7. तिवारी, रामचन्द्र (2017), अधिवास भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स इलाहाबाद।
8. जिला सांख्यिकीय विकास पत्रिका, जनपद जौनपुर (2018)।
9. जनगणना निदेषालय उ0प्र0, लखनऊ।
10. स्थानीय निकाय निदेषालय उ0प्र0, लखनऊ।
11. District Censes Handbook, Jaunpur (2011)
12. http://www.jaunpur.nic.in